4. **गोदना**– गोदना का अर्थ छेदना होता है सबसे पहले गोदना शैली में, विभिन्न ज्यामितीय पैटर्न में दोहराए गए चित्रों को व्यवस्थित किया जाता है। दूसरे, चित्र ज्यादातर काले होते हैं और कभी–कभी रंग से भरे होते हैं।

5. **कोहबर**– कोहबर का अर्थ है विवाह के रीति–रिवाजों और रीति–रिवाजों के लिए मिथिला शादी के दौरान परिवर्तित शयनकक्ष। ये पेंटिंग मुख्य रूप से हिंदू विवाह समारोहों को दर्शाती हैं। इसके अलावा, वे मुख्य रूप से दूल्हा और दुल्हन के घर के बेडरूम की दीवारों पर बने होते हैं।

मधुबनी पेंटिंग का वैश्विक परिदृश्य

यह आजकल अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर चुका है। मधुबनी पेंटिंग के शीर्ष आयात देश संयुक्त अरब, नीदरलैंड, यूएसए और ऑस्ट्रेलिया हैं (स्रोतः https%//connect2india-com) अधिकांश कला मेलों और प्रदर्शनियों में हम मधुबनी पेंटिंग पा सकते हैं। इसे भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) ने अपने डेबिट कार्ड की पृष्ठभूमि के रूप में अपनाया है। मधुबनी पेंटिंग मिट्टी की दीवारों से लेकर विश्व संग्रहालयों तक जाती हैं– कई प्रमुख कलाकारों की पेंटिंग दुनिया के विभिन्न संग्रहालयों (लंदन आर्ट गैलरी और जापान आर्ट गैलरी) के स्थायी संग्रह खंड में हैं।

मधुबनी पेंटिंग की सफलता की कहानी

कलाकार रमन कुमार मिश्रा, मधुबनी कलाकृति से चित्रित अपने हस्तनिर्मित फेस मास्क के ऑर्डर से भर गए थे। कोविड महामारी के दौरान उनके हाथ से पेंट किए गए फ़ेस मास्क के वायरल होने के बाद उनका फोन बजना बंद नहीं हुआ। मिश्रा के मुताबिक, जितवारपुर के साथ–साथ आसपास के गांवों से भी उन्होंने करीब 250 परिवारों को रोजगार दिए है, उन्होंने बढ़ती मांग को देखते हुए मास्क सिलने के जॉब वर्क के लिए 15 दर्जी भी हायर किए हैं।

मधुबनी पेंटिंग के कुछ राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता

1. श्रीमती जगदंबा देवी – 1975 (पद्म श्री पुरस्कार)
2. श्रीमती महासुंदरी देवी–1978,1979 और 1981 (पद्म श्री पुरस्कार)
3. श्रीमती सीता देवी – 1981 (पद्म श्री पुरस्कार) और (1984 में बिहार रत्न सम्मान)
4. श्रीमती गंगा देवी – 1984 (पद्म श्री पुरस्कार)
5. श्रीमती बाउआ देवी – 1984 में (राष्ट्रीय पुरस्कार) और(2017 पद्म श्री पुरस्कार)
6. श्रीमती गोदावरी दत्ता – 1980 और 2019 (पद्म श्री पुरस्कार)
7. दुलारी देवी 2021 (पद्म श्री पुरस्कार)

मधुबनी चित्रों को लोकप्रिय बनाने के लिए सुझावात्मक उपाय के लिए निम्नलिखित

1. ग्रामीण महिलाओं और युवाओं के रोजगार सृजन के लिए के.वी.के, एसएयू और सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय के माध्यम से मधुबनी पेंटिंग पर कौशल विकास प्रशिक्षण आयोजित करने की आवश्यकता है।
2. इन पेंटिंग्स के सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों की स्थापना होनी चाहिए।
3. मधुबनी पेंटिंग के विपणन को बढ़ावा देने के लिए एक ई–कॉमर्स पोर्टल शुरू करने की आवश्यकता है।
4. मधुबनी पेंटिंग को बढ़ावा देने के लिए सरकार स्वयं सहायता समूहों को वित्त पोषित कर सकती है जो ग्रामीण आबादी को रोजगार प्रदान कर सकती है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
कृषि विज्ञान केन्द्र, भगवानपुर हाट सिवान
(डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रिय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर)
मार्गदर्शक– डॉ0 मधुसुदन कुण्डु, निदेशक प्रसार शिक्षा

Printed By - ***New Print Zone***, Samastipur # 9771222492

प्र.शि.नि./प्रकाशन/363/2022–23

मधुबनी पेंटिंग - मिथिला की जीवंत लोक कला

लेखकगण

सुश्री सरिता कुमारी, डॉ. अनुराधा रंजन कुमारी,
डॉ. प्रत्युष कुमार, डॉ. हर्षा बी.आर. एवं डॉ. अनुपमा कुमारी

कृषि विज्ञान केन्द्र
भगवानपुर हाट, सिवान
डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर - 848125 (बिहार)

मधुबनी पेंटिंग

मधुबनी पेंटिंग कई प्रसिद्ध भारतीय कला रूपों में से एक है। यह बिहार के मिथिला क्षेत्र में प्रचलित है, इसे मिथिला या मधुबनीं कला कहा जाता है यह अक्सर जटिल ज्यामितीय पैटर्न द्वारा बनाया जाता है और इन चित्रों को विशेष अवसरों के लिए अनुष्ठान सामग्री का प्रतिनिधित्व करने के लिए जाना जाता है, जिसमें त्योहारों, धार्मिक अनुष्ठान आदि शामिल हैं। मधुबनी चित्रों में उपयोग किए जाने वाले रंग आमतौर पर पौधों और अन्य प्राकृतिक स्रोतों से प्राप्त होते हैं। ये रंग अक्सर चमकीले होते हैं इसमे लैम्पब्लैक और गेरू जैसे पिगमेंट का उपयोग क्रमशः काला और भूरा रंग बनाने के लिए किया जाता है। समकालीन ब्रश के बजाय, पेंटिंग बनाने के लिए टहनियाँ, माचिस और यहाँ तक कि उंगलियों जैसी वस्तुओं का उपयोग किया जाता है।

इतिहास और विकास

मधुबनी पेंटिंग की उत्पत्ति बिहार के मिथिला क्षेत्र में हुई थी। मधुबनी पेंटिंग के कुछ शुरुआती संदर्भ हिंदू महाकाव्य रामायण में पाए जा सकते हैं, जब सीता के पिता राजा जनक ने अपने चित्रकारों से अपनी बेटी की शादी के लिए मधुबनी पेंटिंग बनाने के लिए कहा यह ज्ञान पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होता रहा और पेंटिंग क्षेत्र से घरों को सुशोभित करने लगी है। इसमे गाँव की महिलाओं ने अपने–अपने घर की दीवारों पर इन चित्रों का अभ्यास किया। उनके चित्र अक्सर उनके विचारों, आशाओं और सपनों को चित्रित करते थे।

समय के साथ, मधुबनी पेंटिंग उत्सवों और शादियों जैसे विशेष आयोजनों का हिस्सा बन गईं। धीरे–धीरे, इस कला ने कला के पारखी लोगों को आकर्षित किया क्योंकि कई समकालीन भारतीय कलाकारों ने कला को वैश्विक मंच पर लिया है। प्लास्टर की गई मिट्टी की दीवार के पारंपरिक आधार को जल्द ही हस्तनिर्मित कागज, कपड़े और कैनवास से बदल दिया गया। चूंकि पेंटिंग एक सीमित भौगोलिक सीमा तक ही सीमित हैं, इसलिए थीम और शैली कमोबेश एक जैसी हैं।

मधुबनी पेंटिंग की विवरण

सभी मधुबनी पेंटिंग्स की मुख्य विशेषताएं – डबल लाइन बॉर्डर, फ्लोरल पैटर्न, एब्सट्रैक्ट पैटर्न होते है जैसे– उभरी हुई आंखों वाले देवताओं की आकृतियाँ और आकृतियों के चेहरों पर एक नूकिला वाली नाक होता है। आम तौर पर इस पेंटिंग मे कोई जगह खाली नहीं छोड़ी जाती है और यह अंतराल फूलों, जानवरों, पक्षियों और यहां तक कि ज्यामितीय डिजाइनों से भरे हुए हैं।

यह डिजाईन निम्नलिखित है।

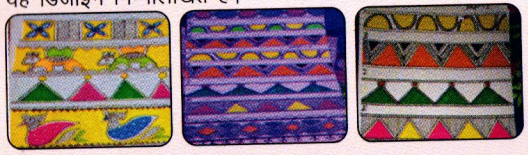

Fig. 1 : बॉर्डर

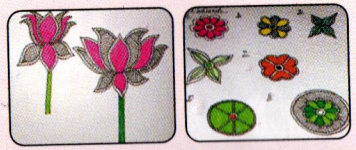

Fig. 2 : फ्लोरल पैटर्न्स

Fig. 3 : बलजिंग आईज एंड जोल्टिन्ग नोज

Fig. 4 : जियोमेट्रिक

Fig. 5 : चिड़िया

मधुबनी पेंटिंग में इस्तेमाल होने वाले रंग

पहले केवल प्राकृतिक रंगों का ही प्रयोग किया जाता था लेकिन अब मानव निर्मित रंग का भी उपयोग किया जाने लगा है।

कुछ प्राकृतिक रंगों की व्युत्पत्ति

काला – कालिख और गाय के गोबर को मिलाकर
पीला – हल्दी, पराग, चूना, बरगद के पत्तों के दूध से,
नीला – इंडिगो
लाल – कुसुम के फूल का रस या लाल चंदन
हरा – लकड़ी सेब के पेड़ के पत्ते
सफ़ेद – चावल का पाउडर
संतरा – पलाश के फूल
आजकल पोस्टर और एक्रेलिक रंगों का भी उपयोग किया जाता है।

मधुबनी पेंटिंग में कुछ महत्वपूर्ण प्रतीक (Symbol)

1. मछली प्रजनन आकार उर्वरता का प्रतीक

2. दो मोर – अनंत काल का प्रतीक

3. हाथी– सफल गर्भाशय का प्रतीक

4. कमल– यौन उर्जा का प्रतीक

5. तोता– काम का प्रतीक

6. सॉप– पुनर्जनन का प्रतीक

7. कछुए – जीवन शक्ति और शौभाग्य

8. सूर्य और चंद्रमा – दिर्घायु

मधुबनी पेंटिंग के चरण

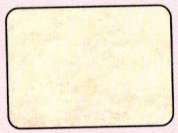

पहला चरण–1: हाथ से बना कागज या रेशमी कपड़ा लें

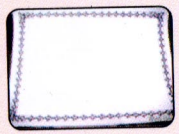

दुसरा चरण–2 : एक सुंदर बॉर्डर बनाएं

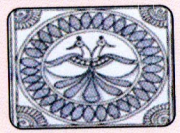

तिसरा चरण– 3: एक सुंदर लेआउट बनाएँ

चौथा चरण–4 : पेंट ब्रश का उपयोग करके लेआउट को पेंट करें

पाचवॉ चरण– 5: पेंटिंग को पूरी तरह सूखने के लिए छोड़ दें

मधुबनी पेंटिंग की शैलियाँ (Styles)

1. **कचनी**– का शाब्दिक अर्थ है रेखा कला। कचनी शैली में विस्तृत रेखाचित्र बनाए जाते हैं। कचनी शैली की पेंटिंग ज्यादातर मोनोक्रोम होती हैं। दूसरे शब्दों में, केवल दो रंग। इसके अलावा, ये पेंटिंग मुख्य रूप से जानवरों, फूलों और अन्य प्राकृतिक पहलुओं को दर्शाती हैं।
2. **भरनी**– भरणी शब्द का अर्थ है 'भरना'। मधुबनी पेंटिंग की भरनी शैली में, छवियों की रूपरेखा बोल्ड और गहरे काले रंग में खींची गई होती है। जबकि, चित्र चमकीले रंगों से भरे हुए होते हैं।
3. **तांत्रिक**– तांत्रिक का संबंध 'तंत्र' से है जो धार्मिक कर्मकांडों से संबंधित है। इसमे हिंदू पौराणिक पात्रों या धार्मिक अनुष्ठानों और जुलूसों को दर्शाते हैं। इसके अलावा, ये पेंटिंग आमतौर पर विशेष अवसरों या देवताओं की प्रार्थना में शामिल होती हैं।